जहांगीर (1605 - 1527) ई०

- 38th lecture by
Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA

Scanned with CamScanner

जहाँगीर (1605-1527 ई0)
(मुगल वंश)

— 38th lecture

→ सलीम (जहांगीर) का जन्म 30 अगस्त 1569 ई0 को फतेहपुर सीकरी में स्थित शेख सलीम चिश्ती की कुटिया में आमेर (जयपुर) के राजा भारमल की पुत्री मरियम उज्जमानी के गर्भ से हुआ था। सलीम का मुख्य शिक्षक अब्दुर्रहीम खानखाना था। सलीम का पहला विवाह 1585 ई0 में आमेर के राजा भगवानदास की पुत्री और मानसिंह की बहन मानबाई से हुआ था। इसी पत्नी से खुसरो का जन्म हुआ था।

→ सलीम का दूसरा विवाह उदय सिंह की पुत्री जगत गोंसाई के साथ हुआ था। इसी से खुर्रम का जन्म हुआ था। मानबाई को सलीम ने शाहबेगम का पद प्रदान किया था किन्तु बाद में उसने सलीम की आदतों से दुखी होकर आत्महत्या कर ली थी। जहांगीर ने गद्दी पर बैठते ही आगरे के किले की शाहबुर्ज और यमुना के किनारे खड़े पत्थर के एक खम्भे के बीच न्याय की प्रसिद्ध जंजीर लगवायी जिसमें 60 घंटियां थी तब बारह घोषणा प्रकाशित करवायी।

→ जहांगीर की बारह घोषणाओं को - आइने जहांगीरी कहा जाता है। जहांगीर को गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम 1606 ई0 में खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। खुसरो को सिक्खों के पांचवे गुरु अर्जुनदेव का आशीर्वाद प्राप्त था। इसके अतिरिक्त उसे मानसिंह तथा खानेआजम (अजीज कोका) का परोक्ष रूप से समर्थन प्राप्त था। खुसरो को आशीर्वाद एवं आर्थिक सहायता देने के कारण जहांगीर ने उनपर राजद्रोह का आरोप लगाकर फांसी की सजा दी थी तथा उनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली थी। गुरु अर्जुनदेव की समाधि लाहौर दुर्ग के ठीक बाहर स्थित है।

Scanned with CamScanner

साम्राज्य विस्तार

→ जहांगीर ने गद्दी पर बैठते ही 1605 ई० में शहजादा परवेज के नेतृत्व में एक विशाल सेना मेवाड़ विजय के लिए भेजी किन्तु टेवार दर्रे के पास हुए युद्ध में कोई निर्णय नहीं हुआ।

→ जहांगीर ने 1608 ई० में महावत खां, 1609 ई० में अब्दुल्ला खां तथा 1613 ई० में खुर्रम के नेतृत्व में कई अभियान किया। फलस्वरूप 1615 ई० में राणा अमर सिंह एवं मुगलों के बीच एक सन्धि होगई।

→ राणा अमरसिंह एवं मुगलों के बीच संधि की निम्न-लिखित शर्तें हैं-

ⓐ राणा अमर सिंह ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

ⓑ राणा स्वयं न जाकर अपने पुत्र करण सिंह को मुगल दरबार में भेजना था।

ⓒ जहांगीर ने मेवाड़ का समस्त भू-क्षेत्र एवं चित्तौड़ का किला राणा को वापस कर दिया किन्तु शर्त यह थी कि वह केवल चित्तौड़ के किले को सुदृढ़ नहीं करवायेगा।

→ राणा अमर सिंह ने इस संधि के परिणामस्वरूप आत्मग्लानि के कारण अपना सिंहासन अपने पुत्र युवराज करण सिंह को सौंपकर नौ-चौकी नामक एकान्त स्थान पर जाकर अपना शेष जीवन व्यतीत किया।

→ जहांगीर ने राणा अमर सिंह एवं उसके पुत्र करण सिंह की संगमरमर की दो मूर्तियाँ बनवाकर आगरा में अपने राजमहल के उद्यान में रखवाया।

Scanned with CamScanner

जहांगीर का दक्षिण विजय

→ जहांगीर ने अपने अभियानों के तहत अन्ततः 1617 ई० में खुर्रम को अहमदनगर अभियान पर भेजा और स्वयं मांडू पहुंचगए किन्तु बीजापुर के शासक की मध्यस्थता के कारण अहमद नगर और मुगलों में संधि हो गयी।

→ जहांगीर ने संधि के फलस्वरूप खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दी तथा बीजापुर के शासक को फर्जन्द की उपाधि दी। 1621 ई० में जहांगीर ने अपना दक्षिण अभियान समाप्त कर दिया क्योंकि इसके बाद उसे 1623 ई० में शाहजहाँ के विद्रोह और 1626 ई० में महावत खां के विद्रोह के कारण दक्षिण की ओर ध्यान देने का अवसर ही नहीं प्राप्त हो सका।

→ मलिक अम्बर ने टोडरमल की भूराजस्व प्रणाली को अपनाया, भूमि की नाप करवायी तथा पैदावार का 1/3 भाग लगान के रूप में वसूल किया। मुगलों से युद्ध के दौरान मलिक अम्बर ने गुरिल्ला युद्ध नीति अपनायी और उसने बड़ी संख्या में मराठों को सेना में भर्ती कराया।

→ मुगलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध मलिक अम्बर से पहले मेवाड़ बुन्देलखण्ड के हिन्दू राजाओं और अफगानिस्तान की कबाईली जातियों ने अपनाया था। मलिक अम्बर ने अबीसीनिया के अरबों और अंगोरा के सीदियों की सहायता से एक शक्तिशाली नौ-सेना स्थापित की थी।

→ जहांगीर के राज्यकाल की एक उल्लेखनीय सैनिक सफलता 1620 ई० में उसकी पूर्वी पंजाब की पहाड़ियों पर स्थित कांगड़ा के दुर्ग पर अधिकार करना। जहांगीर के शासनकाल में 1622 ई० में फारस के शाह ने कंधार मुगलों से जीत लिया।

→ जहांगीर के शासनकाल में 1623 ई० में हुए शाहजहाँ के विद्रोह को दबाने का मुख्य श्रेय महावत खां को था।

इसप्रकार 28 October 1627 ई० को जहांगीर की मृत्यु हो गयी और उसे लाहौर के निकट शाहदरा नामक स्थान पर रावी नदी के किनारे दफनाया गया।

Scanned with CamScanner